खण्ड–8, अंक–1, वर्ष–2020 शोध पत्र
D.O.I.: 10.22445/avsp.v8i1.4

राजस्थान में चौसिंगा वितरण–एक अध्ययन

सतीश कुमार शर्मा

राजस्थान वन सेवा (से.नि.), 14–15, चकरी आम्बा, साकेत नगर, रामपुरा चौराहा, झाडोल रोड, पोस्ट–नाई, उदयपुर–313 004, राजस्थान, भारत

प्राप्ति तिथि–02.09.2020, स्वीकृति तिथि–14.09.2020

सार– राजस्थान के चार अभयारण्यों फुलवारी की नाल, सीतामाता, कुम्भलगढ़ एवं टॉड़गढ़–रावली में चौसिंगा की अपेक्षाकृत स्थिति अच्छी है। इसके अतिरिक्त यह प्रजाति झालावाड़, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, अलवर, कोटा, व सिरोही जिलों में कहीं–कहीं विद्यमान है। कभी यह प्रजाति बांरा, बूंदी एवं बाँसवाड़ा जिलों में भी विद्यमान थी, परन्तु अब वहाँ के वन क्षेत्रों में अदृश्य है। राज्य के अभयारण्यों में चौसिंगा प्रजाति को संरक्षित करने हेतु शीघ्र प्रभावी योजना के कार्यान्वयन की आवश्यकता है, यदि तत्काल पर्याप्त उपाय अमल में नहीं लाये गये तो राजस्थान में इस प्रजाति का विलुप्तीकरण हो सकता है।

बीज शब्द– राजस्थान, चौसिंगा, वितरण, जैवविविधता

Distribution of Four–horned Antelope in Rajasthan

Satish Kumar Sharma

Rajasthan Forest Service (Retd.), 14-15, Chakri Amba, Saket Nagar, Rampura Choraha, Jhadol Road, Post – Nai, Udaipur–313 004, Rajasthan, India

Abstract- Population of Four – horned Antelope is relatively better in Pholwari- ki- Nal, Sitamata, Kumbhalgarh and Todgarh – Roali Wildlife Sanctuaries. Besides these locations, this species is dotted in the forests of Jhalawar, Dungarpur, Pratapgarh, Alwar, Kota and Sirohi districts. Earlier this species was present in the forests of Baran, Bundi and Banswara districts also but now it is not there. It needs quick and intensive measures to conserve the species in the wild in the state. If we fail to do so, this species may face extermination in Rajasthan.

Key words- Rajasthan, Four – horned Antelope, Distribution, Biodiversity

1. परिचय

चौसिंगा (Four-horned Antelope, *Tetracerus quadricornis de Blainville*, 1816) की भारत में 3 उपजातियाँ पायी जाती हैं जो *टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस क्वाड्रीकॉर्निस, टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस आयोडीज* तथा *टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस सबक्वाड्रीकॉर्निस* हैं। पहली उपजाति राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बंगाल, उड़ीसा, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश एवं कर्नाटक राज्यों में पायी जाती है। तीनों उपजातियों में इसका वितरण क्षेत्र सबसे बड़ा है। *टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस सबक्वाड्रीकॉर्निस* का फैलाव आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा तमीलनाडु में है। *टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस आयोडीज* का वितरण केवल झारखण्ड एवं बिहार तक सीमित है। इस तरह इस उपजाति का वितरण क्षेत्र भारत में सबसे छोटा है। इस प्रजाति के विविध पहलुओं को जानने हेतु संदर्भित साहित्य बहुत उपयोगी है।[1–13] चौसिंगा खतरे से घिरी प्रजाति है। यह एकमात्र ऐसा स्तनधारी प्राणी है जिसके सिर पर दो जोडी सींग पाये जाते हैं। यह प्राणि मृग वर्ग (एंटेलोप) का सदस्य है जो शुष्क पतझड़ी, झाड़ीदार, ऊबड़–खाबड़ पथरीले क्षेत्र एवं पहाड़ी जंगलों में रहना पसंद करता है। कभी–कभी यह लम्बी घास के क्षेत्रों में भी देखा जाता है। देखा जाये तो यह मृगों की बजाय हिरणों हेतु उपयुक्त आवास में रहना पसंद करता है तथा कई जगह यह चीतल एवं सांभर के आवास को साझा करता है।

Corresponding Author: sksharma56@gmail.com

2. अध्ययन के उद्देश्य

राजस्थान के वनों में यह प्रजाति कई जगह विद्यमान है लेकिन इसके वितरण के बारे में अधिक विस्तृत एवं सुस्पष्ट जानकारी का अभाव है। विशेषकर संरक्षित क्षेत्रों में तो कुछ जानकारी मिलती है परन्तु अन्य वन क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति सबंधित पर्याप्त जानकारी का अभाव है। राजस्थान के जंगलों की परिस्थितियों में इस प्राणि के जीवन इतिहास संबंधी अन्य पहलुओं की जानकारी का भी अभाव है। साथ ही मेनन[9] ने अपनी पुस्तक ''इन्डियन मैमल्स– ए फील्ड गाइड'' में जो वितरण मानचित्र दिया है, उसमें चौसिंगा को दक्षिणी एवं दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र तक सीमित बताया है। क्योंकि यह प्रजाति पूर्व दिशा में काफी आगे अलवर जिले में स्थित सरिस्का बाघ परियोजना क्षेत्र में भी विद्यमान है अतः इस वितरण मानचित्र में भी परिमार्जन की आवश्यकता है। उपरोक्त उद्देश्यों को पूर्ण करते हेतु ही यह अध्ययन अपेक्षित था।

3. प्रयोगात्मक अध्ययन विधि

लेखक राजस्थान वन विभाग में वर्ष 1980 से 2016 तक राजकीय सेवा में रहा। इस दौरान राज्य के वनों में सुदूर तक सेवा कार्य, अध्ययन, अवलोकन एवं भ्रमण किये। स्थानीय लोगों, खासकर वनवासियों एवं आदिवासियों से काफी संपर्क में रहे जो सूचनाओं का बड़ा स्रोत साबित हुए। राजकीय सेवा में वन्य प्राणियों की गणना, सुरक्षा, पुनर्वास एवं विधिक कार्यवाहियों के अवसर मिले जिनके संपादन में कई बार चौसिंगा संबंधित सही जानकारियाँ प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध हुए। यद्यपि यह अध्ययन कोई पूर्व नियोजित नहीं है, लेकिन सेवा काल के अवधि में प्राप्त हुये आँकडों व सूचनाओं का विश्लेषण किया गया है। साथ ही फुलवारी वन्यजीव अभयारण्य में पी–एच.डी. अध्ययन में वर्ष 2002 से 2007 तक अभयारण्य में विधिवत अध्ययन भी संपादित किया। अध्ययन अवधि में प्राणी के स्थानीय नाम, वनक्षेत्र/आवास का प्रकार एवं स्थिति, संख्या एवं गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की गई।

मानचित्र–1: राजस्थान में चौसिंगा के वितरण क्षेत्र को दर्शाने वाला मानचित्र

मानचित्र–1 में दर्शाये गये काले वृत्त, खाली वृत्त तथा टूटी रेखा वाले वृत्तों का विवरण निम्नवत है–

1. काले वृत्त– वह क्षेत्र जहाँ चौसिंगा अच्छी संख्या में विद्यमान हैं एवं पहले से ही अच्छी तरह ज्ञात हैं।
2. खाली वृत्त– वह अल्प ज्ञात क्षेत्र जहाँ सर्वे के दौरान चौसिंगा उपस्थित पाये गये।
3. टूटी रेखा वाले वृत्त– वह क्षेत्र जहाँ प्रजाति पहले वितरण में थी परन्तु वर्तमान में उपस्थिति के संकेत नहीं हैं। (बूंदी जिले में भी प्रजाति पहले वितरण में थी परन्तु संभावना है कि अब नहीं है।)

4. प्रेक्षण, विवरण एवं विवेचना

अध्ययन के दौरान राजस्थान राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चौसिंगा के स्थानीय नाम संज्ञान में आये। विभिन्न क्षेत्रों में निम्न नाम प्रचलन में पाये गये: **सारिणी–1** से स्पष्ट है कि राज्य के विभिन्न भागों में अलग–अलग नाम चलन में हैं। तँवर[2] ने अपनी पुस्तक ''शिकारी और शिकार'' में चार सींगों वाले नरों को ''चौसिंगा'' तथा बिना सींग वालों को ''बुटार'' नाम से पुकारने की जानकारी दी है।

सारिणी–1: राजस्थान में प्रचलित स्थानीय नाम

क्र.सं.	जिला	स्थान	प्रचलित स्थानीय नाम
1	अलवर	बाघ परियोजना सरिस्का	घंटाली
2	उदयपुर	फुलवारी की नाल अभयारण्य	बुटार (भील व गरासिया नाम), भैंकरी, भैंकर (कथौड़ी नाम)
3	उदयपुर, पाली, राजसमन्द, अजमेर	कुम्भलगढ़ एवं टॉडगढ़–रावली अभयारण्य	बुटार, बुटाड़
4	चित्तौडगढ़ एवं प्रतापगढ़	सीतामाता एवं बस्सी अभयारण्य	भेड़ल, भेड़ली, भेड़ला, भेड़की

5. प्रजनन

अध्ययन अवधि में प्रजनन संबंधी प्राप्त तथ्यों की जानकारी **सारिणी–2** में प्रस्तुत है।

यद्यपि वन्य अवास में इस प्राणि से संबंधित प्रजनन संबंधी आँकड़ों की कमी है, परन्तु गुलाब बाग चिड़ियाघर, उदयपुर एवं चिड़ियाघर कोटा के उपलब्ध कुछ आँकड़ों से अच्छी जानकारी मिलती है। चौसिंगा मादायें एक बार में 1 से 2 बच्चों को शीत व वर्षा के मौसम में जन्म देती हैं। चिड़ियाघर में गर्मी के मौसम मे बच्चों का जन्म होते नहीं देखा गया। एक बार में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या नाथावत[3] के अध्ययन निष्कर्ष के अनुरूप है।

सारिणी–2: प्रजनन संबंधी तथ्य

क्र.स.	ऋतु	दिनांक	स्थान'	एक बार में बच्चों की संख्या (नरः मादाः लिंग अज्ञात)	बच्चों का स्त्रोत''	विशेष विवरण
1	शीत	1.12.2008	1	1:1:0	1	मृत बच्चों को गर्भ से निकाल कर लिंग जाँच की गई
2	शीत	18.1.2009	1	1:1:0	2	–
3	शीत	17.1.2010	1	1:1:0	2	–
4	वर्षा	29.8.2007	1	1:0:0	2	–
5	वर्षा	16.2.2009	1	0:0:2	2	दूर बाड़े में होने से लिंग नहीं पहचाना जा सका
6	वर्षा	1.9.2009	1	0:0:2	2	दूर बाड़े में होने से लिंग नहीं पहचाना जा सका
7	वर्षा	जुलाई 2010	2	0:1:0	3	डॉ0 अखिलेष कुमार, निजी वार्तालाप 2020

*1 = गुलाब बाग चिड़ियाघर, उदयपुर; 2 = चिड़ियाघर कोटा

**1 = गर्भित मादा की मृत्यु हो जाने से पोस्टमार्टम कराया गया, 2 = प्राकृतिक रूप से जन्म हुआ, 3 = भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य में मृत गर्भित मादा मिलने पर कोटा चिड़ियाघर में पोस्टमार्टम कराया गया।

6. प्राचीन शिकार प्रकरण

एक समय था जब दक्षिणी राजस्थान में बाघों की उपस्थिति वन क्षेत्रों में आम बात थी।[15,16] प्राचीन समय में राजा–महाराजाओं को बाघ, तेदुएं एवं सिंह जैसी बड़ी बिल्लियों के शिकार का शौक था परन्तु तत्कालीन डूँगरपूर रियासत के महारावल चौसिंगा का शिकार भी करते थे। तत्कालीन की गई शिकारों की ट्रॉफियाँ डूँगरपुर स्थित उदयनिवास महल में आज भी अच्छी स्थिति में सुरक्षित हैं जिनका विवरण **सारिणी–3** में अंकित है:

सारिणी–3: दक्षिणी राजस्थान में स्थित तत्कालीन डूँगरपुर रियासत के उदयनिवास महल मे प्रदर्शित चौसिंगा ट्रॉफी

क्र0सं0	स्थान जहाँ से शिकार किया गया	शिकार का वर्ष	शिकार स्थल पर वर्तमान में चौसिंगा उपस्थिति विवरण
1	हाबली (बीछीवाड़ा वन परिक्षेत्र)	1931	अनुपस्थित
2	ठाड़ी ओबरी (डूँगरपुर वन परिक्षेत्र)	1934	अनुपस्थित
3	लोलकपुर (आसपुर वन परिक्षेत्र)	1937	बहुत कम
4	खानंद (वेणेश्वर धाम के पास)	1945	अनुपस्थित

उदयनिवास महल मे प्रदर्शित ये चौसिंगा ट्राफियाँ तत्कालीन समय में दक्षिणी राजस्थान, खासकर डूँगरपुर के वनों में चौसिंगा की अच्छी संख्या में उपस्थिति का संकेत देते हैं। लेकिन गत 70–80 वर्षों के अन्तराल के बाद आसपुर रेंज के वनक्षेत्रों को छोड़कर यह प्रजाति अब देखने को नहीं मिल पाती है। देश की आजादी के समय यह प्रजाति डूँगरपुर रियासत के राजधानी वनखण्ड में भी अच्छी संख्या में विद्यमान थी परन्तु अब आवास विनाश एवं अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप के कारण यह प्रजाति वहाँ से समाप्त हो चुकी है। (श्री समर सिंह, निजी वार्तालाप, 2005)।

7. नये क्षेत्रों में अध्ययन

वन्यजीव गणना रिकॉर्ड के अनुसार चौसिंगा की राजस्थान के चार अभयारण्यों फुलवारी की नाल, सीतामाता, कुम्भलगढ एवं टॉड़गढ़–रावली में अच्छी उपस्थिति रही है (श्री राहुल भटनागर, मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव उदयपुर, निजी वार्तालाप 2018)। अन्य वन क्षेत्रों में भी, विशेषतः दक्षिणी एवं दक्षिण–पूर्वी भाग (हाड़ौती क्षेत्र) में भी इस प्रजाति की स्थिति अच्छी थी परन्तु गत 70–80 वर्षों के अन्तराल में इस प्रजाति की संख्या में बहुत गिरावट दर्ज हुई है। वर्तमान में इस प्रजाति की उपस्थिति का आंकलन करने हेतु सर्वेक्षण किया गया एवं इस प्रजाति की उपस्थिति जानने हेतु निम्न विधियों को उपयोग में लाया गया:

विधि–1 : वन क्षेत्रों में पैदल या वाहन से चलते हुए प्राणि का प्रत्यक्ष अवलोकन,

विधि–2 : बिना व्यवधान किये जल स्रोत पर पानी पीते हुये या उसके समीप अवलोकन,

विधि–3 : वन विभाग की गणना सूचनाओं का अवलोकन,

विधि–4 : वन विभाग के स्टॉफ द्वारा प्रत्यक्ष देखे जाने की सूचनाएँ,

विधि–5 : स्थानीय लोगों से प्राप्त सूचना,

विधि–6 : वन विभाग द्वारा लगाऐ गये कैमरा ट्रेपों से प्राप्त फोटो,

विधि–7 : प्राणि की मेंगणी के ढेर (मेड्डेन) पर उपस्थिति (प्राणि बार–बार मेंगणी एक ही स्थान पर त्यागता है जिससे एक ढेरी बन जाती है)।

विधि–8 : चौसिंगा की विशिष्ट समझ रखने वाले लोगों से प्राप्त सूचना,

विधि–9 : वन अधिकारियों, पर्यटकों द्वारा लिये गये छायाचित्र।

उपरोक्त विधियों का उपयोग करते हुए चौसिंगा की उपस्थिति से संबंधित प्राप्त सूचनाएं **सारिणी–4** में नीचे अंकित हैं:

सारिणी–4: चार अभयारण्यों फुलवारी की नाल, सीतामाता, कुम्भलगढ़ एवं टॉड़गढ़ रावली के अतिरिक्त राजस्थान में अन्य स्थानों पर चौसिंगा की उपस्थिति

क्र.सं.	जिला	स्थल का नाम	उपस्थिति विवरण एवं उपलब्धता	उपस्थिति जानने हेतु प्रयुक्त विधियाँ	विशेष विवरण
1	अलवर	बाघ परियोजना, सरिस्का	उपस्थित , दुर्लभ	1, 3, 4, 8	श्री रघुवीर सिंह शेखावत, श्री मनोज पाराशर एवं श्री उदयराम जाट, निजी वार्तालाप (क्रमशः 2010, 2018 एवं 2019)

2	राजसमन्द	हल्दीघाटी	उपस्थित, दुर्लभ	4, 5, 9	श्री स्माईल शेख, निजी वार्तालाप, 2020
3	झालावाड़	मशालपुर वन क्षेत्र, गागरोन रेंज	उपस्थित, दुर्लभ	6	एक प्राणी कैमरा ट्रैप में दर्ज हुआ (डॉ. टी. मोहन राज, निजी वार्तालाप 2020)
4	बाँसवाड़ा	तली माखिया वन खण्ड, रेंज गढ़ी	उपस्थित, दुर्लभ	4, 8	वर्ष 2005 में एक प्राणी दिखाई दिया (डॉ. दीपक द्विवेदी, निजी वार्तालाप 2020)
		गरार खोड़ा वन क्षेत्र, कुशलगढ़ रेंज	उपस्थित , दुर्लभ	8	वर्ष 1996 में 1 प्राणी देखा (श्री शैदा हुसैन, निजी वार्तालाप, 2020)
5	डूँगरपुर	आसपुर रेंज का देवपुर वन क्षेत्र (धरियावद रेंज की सीमा पर)	उपस्थित , दुर्लभ	4,5,8	वर्ष 2020 में 2 बार एक–एक प्राणी देखे गये (श्री अपूर्व कृष्ण श्रीवास्तव निजी वार्तालाप, 2020)
		रातापानी व रानी झूला वन क्षेत्र, डूँगरपुर रेंज	उपस्थित, दुर्लभ	4, 5	वर्ष 2016–2018 के बीच 1, 1 एवं 2 प्राणी देखे (श्री वीरेन्द्र सिंह बेड़सा, निजी वार्तालाप, 2019)
6	प्रतापगढ़	देवक माता वन क्षेत्र, रेंज देवगढ़	उपस्थित	8	सागवान जंगल में 8–9 प्राणी 2005 में देखे (श्री मुकेश सैनी, निजी वार्तालाप 2005)
		धरियावद वन क्षेत्र	उपस्थित	8	जल स्रोतों के आस– पास 1–4 की टोली में नजर आते हैं (श्री केशरी सिंह, निजी वार्तालाप, 2016)
7	बारां	शाहबाद	उपस्थित, दुर्लभ	8	वर्ष 1982 में कुनो पालपुर अभयारण्य की सीमा पर कई बार प्राणी देखे गये लेकिन अब वर्षों से प्राणी नजर नहीं आ रहे हैं (श्री राजीव कपूर, निजी वार्तालाप, 2019)
8	चित्तौड़गढ़	आमलदा नाका के वन क्षेत्र, बस्सी अभयारण्य	उपस्थित , दुर्लभ	1, 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9	श्री पी.सी. जैन एवं श्री सुनील सिंह (निजी वार्तालाप, 2020)
		भैंसरोडगढ़ अभयारण्य	उपस्थित, दुर्लभ	3, 8	जल स्रोतों पर 1–2 की संख्या में नियमित नजर आते हैं (श्री अनुराग भटनागर, निजी वार्तालाप, 2020)
9	बूंदी	रामगढ़ विषधारी अभयारण्य	वर्ष 2004 तक देखे गये, वर्तमान में नजर नहीं आ रहे	3, 4, 8	श्री बिठ्ठल सनाढ्य, निजी वार्तालाप, 2020
10	कोटा	दर्रा बाघ परियोजना क्षेत्र	उपस्थित, दुर्लभ	8	डॉ. टी. मोहनराज, निजी वार्तालाप, 2020

11	उदयपुर	जावर माइन्स के कालाघाटा वन क्षेत्र में टेलिंग डैम (रेंज सराड़ा)	उपस्थित, दुर्लभ	1	टेलिंग डैम पर 2016 में 4 प्राणी ग्रीष्म काल में देखे गये।
12	सिरोही	मोरस वन क्षेत्र	उपस्थित, दुर्लभ	1	वर्ष 2004 में गर्मी में पानी पर एक प्राणी देखा गया।

राजस्थान में चौसिंगा पर पहला अध्ययन पूर्व वन अधिकारी श्री जसवन्त सिंह नाथावत द्वारा 1982 में कुम्भलगढ अभयारण्य में भी वी. ऋषि की देख–रेख में किया गया।[3] इसके बाद श्री मेघवाल[7–8] ने दक्षिणी राजस्थान में इस प्रजाति पर अध्ययन किया। इन दोनों अध्ययनों से दक्षिणी राजस्थान में तो इस प्रजाति के वितरण को समझने में मदद मिली परन्तु पूरे राजस्थान में स्थिति को समझाने वाला कोई अध्ययन नहीं हुआ। **सारिणी–4** के तथ्य पूरे राजस्थान में इस प्रजाति के वितरण को समझने में सहयोगी हैं। यह प्रजाति माउन्ट आबू अभयारण्य तथा बाघ परियोजना रणथम्भोर में अनुपस्थित है[11] (श्री बालाजी करी, श्री महेन्द्र सक्सेना एवं डॉ0 धर्मेन्द्र खाण्डल निजी वार्तालाप, 2020)। कभी यह प्रजाति उदयपुर जिले के संतु, बाघदड़ा, अगदा मगरा, कलेर एवं सज्जनगढ़ में सहजता से देखी जा सकती थी लेकिन अब यह प्रजाति वहाँ नहीं है। आजादी के समय सज्जनगढ़ के पिछवाड़े में बड़ी नामक बाँध पर दिनभर में बडी संख्या में चौसिंगा पानी पीते नजर आते थे परन्तु अब यह प्रजाति वहाँ बिलकुल नजर नहीं आती (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वर्तालाप, 2010)। बूंदी जिले में रामगढ विषधारी के केशव– भैरूपुरा (माण्डू जंगल) में पहले यह प्रजाति आसानी से दिखाई देती थी परन्तु अब वहाँ दिखाई नही देती है (श्री बिठ्ठल सनाढ्य, निजी वार्तालाप, 2020)। अरावली पर्वतमाला के पश्चिम दिशा में थार रेगिस्थान में कहीं भी विद्यमान नहीं है।[5,10]

प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा व *लेन्टाना कमारा* द्वारा आवास क्षय व परंपरागत जल स्रोतों के जगह–जगह सूखने, अतिक्रमण एवं जंगलों में मानवीय हस्तक्षेप ने चौंसिगा आवास को बहुत हानि पहुँचायी है जिसके कारण इस प्रजाति की संख्या में गिरावट का दौर प्रारम्भ हुआ है। राजस्थान में यह प्रजाति अरावली के दक्षिण पश्चिम छोर से उत्तर–पूर्वी छोर तक एवं विंध्याचल पर्वतमाला में बारां व झालावाड़ तक इसका फैलाव है, परन्तु जन साधारण, वनकर्मियों एवं विशेषज्ञों से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ है कि इसकी संख्या में अत्यधिक गिरावट आई है। यह प्रजाति चार अभयारण्यों फुलवारी की नाल, सीतामाता, कुम्भलगढ एवं टॉड़गढ़–रावली में अभी भी अच्छी स्थिति में है। पूर्व में भी इन क्षेत्रों के अतिरिक्त यह राजस्थान में अलवर, राजसमन्द, झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ, बारां, चित्तौड़गढ़, बूंदी, कोटा, उदयपुर एवं सिरोही जिलों में अच्छे आवास उपलब्धता के कारण वितरण में रही है एवं अभी भी जगह–जगह इन जिलों में अपनी उपस्थिति बनाए हुए है लेकिन बूंदी, बासवाड़ा एवं बारां जिलों में प्रजाति अधिक संकट का सामना कर रही है। चूँकि यह प्राणि काफी शर्मीला है अतः वन विभाग को इसके प्राकृतिक आवासों में सघन अध्ययन कराना चाहिये ताकि इसकी संख्या का सही अनुमान लगाया जा सके। यदि प्रशिक्षित स्टाफ से गहन सर्वेक्षण करवाया जाये तो इसके अन्य कई क्षेत्रों में भी मिलने की संभावना है।

8. निष्कर्ष

राजस्थान में चौसिंगा की संख्या में निरन्तर गिरावट आ रही है। इसका वितरण क्षेत्र भी सिकुड़ रहा है। यह प्रजाति फुलवारी की नाल अभयारण्य (उदयपुर जिला), सीतामाता अभयारण्य (चित्तौड़गढ़ एवं प्रतापगढ़ जिले) कुम्भलगढ अभयारण्य (उदयपुर, राजसमन्द एवं पाली जिले) तथा टॉड़गढ–रावली अभयारण्य (राजसमन्द, पाली तथा अजमेर जिले) में अपेक्षाकृत अच्छी संख्या में विद्यमान हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इन क्षेत्रों के अतिरिक्त वन क्षेत्रों का अध्ययन करने पर पाया गया कि यह प्रजाति अलवर झालावाड़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, कोटा, उदयपुर एवं सिरोही जिलों के वन क्षेत्रों में अभी भी विद्यमान है **(मानचित्र–1)** लेकिन वन क्षेत्रों में घूमने व जल स्रोतों के आस–पास भी यह कम नजर आने लगी है जो इसकी संख्या में गिरावट का संकेत है। बाँसवाड़ा, बारां, व बूंदी में पहले इस प्रजाति की स्थिति अच्छी थी, परन्तु अब अन्य क्षेत्रों के मुकाबले वहाँ प्रजाति के वर्तमान में उपस्थित होने के स्पष्ट संकेत नहीं मिल रहे हैं। पर्याप्त सुरक्षा, आवास सुधार, उपयुक्त पेय जल व्यवस्था, जंगल की आग की रोकथाम एवं विदेशी खरपतवारों पर नियंत्रण कर इस प्रजाति को संरक्षित व संवर्धित किये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस प्रजाति का सहजता से प्रजनन करवाकर संख्या बढ़ोत्तरी की जा सकती है।[4] यदि पर्याप्त संरक्षण उपाय शीघ्र अमल में नहीं लाये गये तो राज्य के जंगलों से इस प्रजाति को विलुप्तीकरण का सामना करना पड़ सकता है।

आभार

लेखक वन विभाग, राजस्थान का बहुत आभारी है। विभाग के सहयोग से ही यह अध्ययन संभव हुआ है। लेखक श्री समर सिंह, श्री आर. एस. शेखावत, श्री राहुल भटनागर, श्री मनोज पाराशर, डॉ. रजा तहसीन, श्री भरतसिंह, श्री जे. एस. नाथावत, स्व. श्री अमर सिंह चम्पावत,

डॉ. टी. मोहनराज, श्री अपूर्व कृष्ण श्रीवास्तव, श्री बालाजी करी, श्री मुकेष सैनी, श्री पी. सी. जैन, श्री शैदा हुसैन, श्री अनुराग भटनागर, श्री उदय राम जाट, श्री केशरी सिंह, श्री सुनील सिंह, श्री बिठ्ठल सनाढ्य, श्री वीरेन्द्र सिंह बेड़सा तथा डॉ. दीपक द्विवेदी का बहुत आभारी है जिन्होंने अपने अनुभव साझा किये एवं अध्ययन में सहयोग किया।

सन्दर्भ

1. तहसीन, आर. (1995) एग्रेसिव बिहेवियर ऑफ ए थर्स्टी लैपर्ड, पैन्थीरा, पार्डस (लिन.), जरनल ऑफ बॉम्बे नेचूरल हिस्ट्री सोसायटी, खण्ड–92, अंक–1, मु0पृ0 112–113।
2. तंवर, तुलसीनाथ एवं सिंह, धायभाई (1956) शिकारी और शिकार, प्रकाशक स्वयं लेखक, जगदीश चोक, उदयपुर, मु0पृ0 1–363।
3. नाथावत, जे0 एस0 (1982) ए केस स्टडी ऑफ बॉयलॉजी ऑफ फोर – हॉर्न्ड एन्टीलॉप इन कुम्भलगढ़ सैंक्चुरी ऑफ राजस्थान, फोर्थ डिप्लोमा कोर्स इन वाइल्ड लाईफ मैनेजमैन्ट, फॉरेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट एण्ड कॉलेज, देहरादून, मु0पृ0 1–54।
4. भटनागर, आर0 पी0 प्रधान एवं शर्मा, एस0 के0 (2010) कैप्टिव ब्रिडिंग इन फोर–हॉर्न्ड एन्टीलॉप (*टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस*) इप गुलाबबाग जू, उदयपुर, राजस्थान, इन्डियन जू ईयर बुक, खण्ड–6, मु0पृ0 118–122।
5. प्रकाश, ई0 (1997) थार रूक्षक्षेत्र के स्तनी, साइन्टीफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, भारत, मु0पृ0 15–16।
6. प्रेटर, एस0 एच0 (1980) द बुक ऑफ इन्डियन मैमल्स, बॉम्बे नेचूरल हिस्ट्री सोसायटी, मु0पृ0 170–187।
7. मेघवाल, आर0; सेन, पी0 के0 एवं भटनागर, सी0 (2016) डिस्ट्रीब्यूशन एण्ड हेबिटाट प्रीफैरेन्स ऑफ फोर–हॉर्न्ड एन्टीलॉप (चौसिंगा) *टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस* इन कुम्भलगढ वॉइल्ड लाईफ सैंक्चुरी, राजस्थान, ऐम्बिएन्ट साइन्स, खण्ड–3, अंक–1, मु0पृ0 38–42।
8. मेघवाल, आर0 (2017) स्टडी ऑन द बॉयोलॉजी एण्ड बिहेवियरल ईकोलॉजी ऑफ फोर–हॉर्न्ड एन्टीलॉप (*टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस डी ब्लेनविलिया*) इन राजस्थान, पी–एच. डी. थीसिस, प्राणी विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, मु0पृ0 1–153।
9. मेनन, वी0 (2014) इंडियन मैमल्स, हैचेट बुक पब्लिशिंग हाउस, प्रा0 लि0, गुडगाँव, हरयाणा, मु0पृ0 406–455।
10. स्वामी, एम0 के0 (1991) सम ऑब्जर्वेशन ऑफ ड्रिंकिंग एण्ड वॉटर हॉल शेयरिंग बिहेवियर ऑफ मैमल्स ऑफ गजनेर सैक्चुरी, बीकानेर, एम. फिल. डैजर्टेशन, जूलॉजी, डूंगर कॉलेज, बीकानेर, राजस्थान, मु0पृ0 1–79।
11. रैड्डी, जी0 वी0 (2002) मैनेजमैन्ट प्लान ऑफ रणथम्भौर टाइगर रिजर्व 2002–03 टू 2011–12, वन विभाग राजस्थान, मु0पृ0 1–557।
12. रोजर्स, डब्ल्यू0 ए0 (1990) ए प्रीलिम्नरी ईकोलॉजिकल सर्वे ऑफ आलगुवाल स्प्रिंग, सरिस्का टाईगर रिजर्व, राजस्थान, जरनल ऑफ बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, खण्ड–87, अंक–2, मु0पृ0 201–209।
13. राइस, सी0 जी0 (1991) द स्टेटस ऑफ फोर–हॉर्न्ड एन्टीलॉप *टैट्रासीरस क्वाड्रीकॉर्निस*, जरनल ऑफ बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, खण्ड–88, अंक–1, मु0पृ0 63–66।
14. शर्मा, एस0 के0 (2007) स्टडी ऑफ बायोडाईवर्सिटी एण्ड एथनोबाइलॉजी ऑफ फुलवारी वॉइल्ड लाईफ सैंक्चुरी, उदयपुर (राजस्थान), पी–एच. डी. थीसिस, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, मु0पृ0 492–494।
15. शर्मा, सतीश कुमार (2014) दक्षिणी राजस्थान के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बाघ से संबंधित कुछ तथ्य, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–2, अंक–1, मु0पृ0 9–17।
16. शर्मा, सतीश कुमार (2016) दक्षिणी राजस्थान में बाघों की उपस्थिति–कुछ प्रमाण, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–4, अंक–1, मु0पृ0 15–18। DOI: 10.22445/avsp.v4i1.4369